AGPE The Royal Gondwana Research Journal of History, Science, Economic, Political and Social Science
ISSN (E):2583:1348, ISSN(P): 2582:8800 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 03 | Issue 01| January 2022| ***www.agpegondwanajournal.co.in*** | Page No. 21-24

विरांगना रानी हिराई के प्रशासन एंव युद्धनीती का अध्ययन

Dr. Ramkrishna Deshpande
Assistant Professor
Department of History
Shri Dayabhai Patel College of Art & Science, Nagpur, M.S

सारांश:

प्राचिन समय मे संपूर्ण भारत मे बडे बडे युध्द हुवे है । इनमे स्त्रियों की कर्तबगारी और पराक्रम अव्दितीय है। स्त्रियोंने युध्द अपने पराक्रम से जिते है। शत्रु पक्ष को अपने युध्द कौशल्य और रननिती से युध्दमैदान से भगाया है। चाँदागड की रानी हिराई आत्राम इन्होने युध्द ने अपनी कौशल्यता और रननिती का असाधारन परीचय दिया है। ऐसे शुरविर रानी हिराई आत्राम का अगर इतिहास के पन्नोपर नाम ना हो तो इस से बडा दुर्भाग्य क्या हो सकता है। साहीत्यकारोंकी अनदेखी सच्चे इतिहास को दबा देती है। जो इतिहास गौरवपुर्ण हो मै लेखक इसके बारेमे जानकारी दे रहा हूँ। ये वाकई आनेवाले नई पीढी के नौजवानों को प्रेरनादायी साबित हो। और उनके लिऐ एक आदर्श इतिहास की कडी साबित होगी।

रानी हिराई बचपन से ही घुडस्वारी, तलवारबाजी की शौकीन थी इसलिऐ उनमे वे सब विरयोध्दा के गुण भरे थे राज्य को कैसे चलाना यह उन्होने अपने पितासे सिखा था। रानी हिराई एक महान थी जिसने बडी कुशलतासे चाँदागड का राज्य शौर्यतासे , बध्दिमत्तासे और चतुरतासे स्वाभिमानी वृत्तीसे चलाया था।

चाँदागड के गोंडराजा बिरशहा आत्राम प्रथम इनके साथ रानी हिराई की शादी हुई थी । राजा बिरशहा आत्राम चाँदागड को पहली पत्नी रानी हिराई से कन्या हुई उन्हे कोई बेटा नही था। राजा कृष्णशहा की मृत्यूपरांत औरंगजेब व्दारा खिलती वस्त्र, मनसब और मुहर देकर चाँदागड के राज्य पर बिरशहा का राज्यरोहन किया गया ।

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Dr. Ramkrishna Deshpande Assistant Professor Department of History Shri Dayabhai Patel College of Art & Science, Nagpur, M.S Email: deshpande.rs@gmail.com	

प्रस्तावना:

गोंडराजा कृष्णशहा को दुसरी रानी से कालीसिंह नामक बेटा पैदा था जो बाद मे मुसलमान हुवा और उसको बादशहा औरंगजेब ने देवगड का राजा बनाकर उसका नाम नेकनाम खान रखा। राजा बिरशहा और रानी हिराई की जो कन्या हुवी उसका विवाह देवगड के दुर्गपाल से हुवा । किंतू दुर्गपाल का व्यव्हार क्रुरता और हिंसक रहने से वह राजा बिरशहा की बेटीसे दुर्व्यव्हार करता रहा। इस से परेशान होकर राजा बिरशहा ने अपने जमाई राजा दुर्गपाल से युध्द् किया जिसमे राजा की जीत हुई और दुर्गपाल की मृत्यू हुई। चाँदगड के अंर्तगत निम्नलिखीत गड आते है।

इस प्रकार २५ गडोंकी सूची गोंडराजा डॉ. बिरशहा आत्राम वर्तमान चांदागड के राजाके सौजन्य से यह सूची प्राप्त् हुई है। देवगड के राजा बख्तबुलंदशहा का व्यव्हार बादशहा औरंगजेब को नागवार लगा तो इन्होने दिल्ली दरबार से फर्मान निकालकर देवगड के इस राजा को राजगद्दीसे बाहर किया और उसी जगहपर गोंडराजा के भाई कालसिंह आत्राम और उसकी माँ को मुलमान करके देवगड की गद्दीपर आसनस्थ्त कर दिया और गोंडराजा बिरशहा आत्राम को चाँदागड का राजा बना दिया इसका वृतांत "गोंडवाना नवयुग" मे सविस्तर दिया गया है। बादशहा औरंगजेब ने कालसिंह का नाम बदलकर नेकमान शाह रख दिया ।

संशोधनके उद्देश:

1. विरांगना रानी हिराई का प्रशासन एंव युद्धनीती को समझना।
2. रानी हिराई के प्रशासनिक व्यवस्था का अध्ययन।

विश्लेषन:

इ.स १६९५ देवगड यह मध्यप्रदेश के गढामंडला की राजधानी के अंर्तगत आता है। इसलिऐ चांदागड का राजचिन्ह देवगड एंवम आसपास के किल्लों पर दृष्टिगोचर होता है। चाँदागड का साम्राज्य इस नेकनाम खान उर्फ कालसिंह आत्राम व्दारा फैलता गया । गोंडराजा बिरशहा (प्रथम) इनको रानी हिराई से बेटा न होने से गोंडी संस्कृती के अनुरूप उन्होने दुसरी शादी करने की ठानी और इसी शादी के समय बारातीयों मे देवगड के गोंड राजाने भेजा हुवा 'हिरामन' गुप्तहेर व्दारा राजा बिरशहा की हत्या कर दी गयी । रानी हिराई के बेटी का नाम मानकुंवर माना जाता है। परंतू यह कितना सच है ये वर्तमान गोंडराजा डॉ. बिरशहाजी आत्राम इन्हे मालूम है। गोंडवाना नवयुग होली के विशेषांक मे

इसका इतिहास दिया जायेगा । वर्तमान चाँदागड का गोंडराजा डॉ. बिरशहा आत्राम विव्दान और बहोत बुध्दीमान है उनके पास प्राचिन एंवम अर्वाचिन चाँदागड का इतिहास मिलता है। कयोंकी वही वर्तमान मे गोंडराजा है।

रानी हिराई के पती की हत्या होने पर चाँदागड का राज्य संभालनेका का कठीन काम आन पडा। इस समय वरोरा तहसिल के अंर्तगत आनेवाले चंदनगड ऊर्फ चंदनखेडा मे गोंडराजा बिरशहा प्रथम के वंशज उनके चचेरे भाई गोविंदशहा का बेटा अपना दत्तक पुत्र बनाकर चाँदागड गद्दीपर बिठाया और उसका नाम रामशहा रखा गया। गोंडरानी हिराई बिरशहा राजे आत्राम ने चाँदागड पर राज शुरू किया सन १६१६-१७०८ ।

गोंडरानी हिराई बिरशहा आत्राम इन्हाने किये युध्दो मे विजयश्री हासील की :

१) पहला युध्द - गोंडराजा बिरशहा आत्राम का सौतेला भाई कालसिंह ऊर्फ नेकनाम खान को चाँदागड और देवगड इन दोनो राजधानियों पर राज करने की प्रबल इच्छा थी इस वजह से उसने चाँदागड से युध्द शुरू किया । रानी हिराई चाँदागड ने अपने सैन्य व्दारा नेकनाम खान से मुकाबला करने की तयारी की, अपने गुप्तहेर से जानकारी हासील करके - युध्द की तयारी की और बडे कुशलतासे इस हमले को समाप्त कर नेकनामपर विजय पाकर चाँदा का राज्य बचाया ।

२) शाहू महाराज सातारा इनके आदेश के अनुसार कान्होजी भोसले नागपूर सेनासाहेब सुभा और हैबतराव निंबाळकर अपने पुरे सैनिकोंके साथ कानहोजी भोसले के साथ चाँदागडपर हमला बोल दिया । इ.स १७९० से इ.स १७९९ के दरमियान रानी हिराई आत्राम चाँदागड ने अपने सैनिकोंको तयार करके युध्द भुमीपर स्वंयम निकल पडी उनका दिवान परशा को साथ रखा मराठा और गोंड सैनिकोमे जोरदार युध्द हुवा इस युध्द मे मराठोंका सरदार हैबतराव निंबाळकर युध्द मे मारा गया और भोसला मराठे सैनिकोंके साथ नागपूर भाग निकला । रानी हिराई इनके चातुर्य और युध्द नितीसे उन्हे विजयश्री प्राप्त हुवी ।

३) सुलतान निंबाळकर इन्होने अपने पिता के मृत्यू का बदला लेने के लिऐ रानी हिराई इन मे से चाँदागड मे युध्द किया। उनके साथी गंगाराम विसानी, रघुनाथ भी युध्द मे निंबाळकर को मदत दे रहे थे। परसा दिवाण चाँदागड के तरफ से युध्द पर गया था परंतू उसकी हार हुवी फिर भी दुसरे साल शामराव पिलाजी को चाँदागड भेजकर रानी हिराई से तह किया रानी हिराई आत्राम और गादीनविस गोंडराजा रामशहा (छोटा) इन्हे वस्त्र आदि देकर शाहू सातारा ने कहा की खंडेराव

दाभाडे और पेशवा बाळाजी विश्वनाथ चाँदागड के युध्द और तहनामा मे किसी प्रकार का हसतक्षेप ना करे। इस प्रकार से रानी हिराई आत्राम ने चाँदागड का राज्य चलाकर शत्रुओं को भी पराजीत कर अपना शौर्य और ताकद दिखा दी।

चाँदागड के वर्तमान गोंडराजा डॉ. बिरशहा कृष्णशहा आत्राम¼२०१९½ इन्होने रानी हिराई आत्राम के युध्दों के बारे मे सविस्तर अपनी किताब "दखिण गोंडवाना की राजधानी चाँदागड" ऐतिहासीक किताब मे उनके अन्य युध्दों का भी उल्लेख किया है। इ.स १७२८ मे रानी हिराई आत्राम की मृत्यू हुवी इस थोर महात्मा को लेखक सलाम करता है।

निष्कर्ष:

गोंड गण समूह और उनके 47 गण समूह में अपने पालन किए जानवरों का त्यौहार मनाते हैं इसे कोंडू पेन्डूंम कहते हैं। यह त्योहारों के नाम गोंडी भाषा में दिए है। गोंड सगा समाज यह प्राचीन युग में अशिक्षित होने से खेती करना, जानवरों को पालना, नया भोजन या नवा खाना यह त्यौहार करना है एसे त्यौहार गोंड गण अपने परिवार में करते हैं और गोंड ग्राम के युवकयुवतियों इन त्योहारों में नृत्य करते हैं-। भगवान पेरसापेन की स्तुति करते 'कोंडू पेन्डूंम' यह त्यौहार घर के जानवरों की रक्षा हेतु, उनकी संख्या में वृद्धि हेतु, उन जानवरों को बचाने से आर्थिक उन्नति के लिए यह उत्सव मना कर पेरसापेन से आराधना करते हैं।

संदर्भ:

१) डॉ. तेगमपुरे मारोती : "आदिवासी विकास आणी वास्तव" चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद, (२००९)
२) प्रा. गौतम निकम : "मूलनिवासींचे खच्चीकरण" विमलकिर्ती प्रकाशन, चाळीसगाव, (२०११)
३) डॉ. सौ. देवगांवकर शैलजा, डॉ. देवगांवकर एस. जी. : "आदिवासी विश्व" श्री. साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, (२०१५)
४) प्रा. सरकुंडे माधव : "आदिवासी अस्मितेचा शोध" देवयानी प्रकाशन, यवतमाळ, (२०११)
५) डॉ. सौ. देवगांवकर शैलजा, डॉ. देवगांवकर एस. जी. : "आदिवासी विश्व" श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, (२०१५)
६) डॉ. आगलावे प्रदीप : "आदिवासी समाजाचे समाजशास्त्र" श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, (२०१२)

■ ■ ■